पुनर्मिलन

डॉ. अनिल शर्मा
बी.एस.एम. इंटर कॉलेज, रुड़की।

पोर्टब्लेयर का मुंशी प्रेमचन्द सभागार लगभग भर चुका था। मुख्य भूमि से आए साहित्यकार और विद्वान मंच पर विराजमान थे। मध्य अण्डमान की जिला कलेक्टर सुश्री प्रेरणा शर्मा की बेसब्री से प्रतीक्षा हो रही थी। कार्यक्रम के आयोजक द्वार पर उनकी अगवानी के लिए तैयार खड़े थे। तभी कार्यक्रम संचालक ने माईक से घोषणा की कि आज की विचारगोष्ठी की हमारी मुख्य अतिथि जिलाधिकारी महोदया हमारे बीच पधार चुकी हैं। आयोजकों के साथ सुश्री प्रेरणा शर्मा का सभागार में प्रवेश हुआ। उनको सीधे मंच पर ले जाया गया, क्योंकि पहले से ही कार्यक्रम में काफी विलम्ब हो चुका था। कारण बताया गया कि जिलाधिकारी की उपराज्यपाल महोदय के साथ एक जरुरी मीटिंग थी। दीप प्रज्वलन और माँ सरस्वती के चित्र पर पुष्पांजलि की औपचारिकता के बाद संचालक ने कहा कि विचारगोष्ठी में सम्मिलित होने वाले सभी विद्वान, कार्यक्रम अध्यक्ष एवं मुख्य अतिथि हमारे बीच उपस्थित हैं। आइए! विचारगोष्ठी का शुभारम्भ करते हैं। विषय आप सभी को मालूम ही है– ''भारतीय साहित्य में नैतिकता के स्वर''।

मुख्य भूमि से पधारे सभी साहित्यकारों का परिचय कराया गया। अन्य साहित्यकारों का परिचय जिलाधिकारी प्रेरणा शर्मा के लिए सामान्य ही था, लेकिन उत्तराखण्ड के रुड़की शहर से आये डॉ. पी.के. कपिल का परिचय सुनकर प्रेरणा के चेहरे पर असामान्य भाव स्पष्ट नजर आ रहे थे, फिर भी वह अपने आपको संयत व सामान्य दिखाने का प्रयास कर रही थी। डॉ. पी.के. कपिल लगभग 38–40 की वय के आकर्षक व्यक्ति थे, जिनके गोरे चेहरे पर काली दाढ़ी खूब फब रही थी। कानों के ऊपर दोनों तरफ थोडे–थोडे बालों को छोडकर पूरा सिर बाल विहीन था। प्रेरणा चाहकर भी रुड़की से आए इस साहित्यकार डॉ. पी.के. कपिल से अपना ध्यान हटा नहीं पा रही थी। आँखों पर काला चश्मा पहने हुए प्रेरणा भी गुलाबी साड़ी में बहुत सुन्दर दिख रही थी। डॉ. पी. के कपिल को लेकर जो बेचैनी सी प्रेरणा में दिखाई दे रही थी, ठीक वैसे ही असामान्य भाव कलेक्टर प्रेरणा को देखने के बाद डॉ. पी.के. कपिल के चेहरे पर भी आये थे, लेकिन अपने मन के किसी कोने में स्थित किसी चित्र से साम्य स्थापित करने की चेष्टा को डॉ. कपिल ने इसलिए झिड़क दिया था, क्योंकि उस अपने किसी व्यक्ति का यहाँ काला पानी कहे जाने वाले अण्डमान में मिलने का कोई मतलब नहीं था और फिर वह प्रेरणा न होकर नीलिमा थी। डॉ. कपिल ने मन में आए विचार को एक झटके में उड़ा दिया।

गोष्ठी के प्रथम वक्ता उत्तर प्रदेश से आए डॉ. एस.एन.कपूर ने ''कबीर के साहित्य में नैतिकता के स्वर'' विषय पर अपने विचार मजबूती के साथ रखे। एक के बाद एक वक्ता अपने विचारों का प्रस्तुतिकरण कर रहे थे, लेकिन जिलाधिकारी प्रेरणा शर्मा कहीं खो सी गई थीं। इसी शृंखला में रुड़की से पधारे डॉ. पी.के. कपिल का क्रम भी आ गया। डॉ. कपिल ने ''डॉ. योगेन्द्रनाथ शर्मा 'अरुण' के ग़जल साहित्य में नैतिकता के स्वर'' पर अपने सारगर्भित विचार रखना आरम्भ किया। रुड़की की यादों में पहले से खोई कलेक्टर प्रेरणा शर्मा डॉ. कपिल को सुनते हुए भाव–विभोर हो गई। डॉ. कपिल की आवाज उसे बिल्कुल प्रभात जैसी लग रही थी। गंजे सिर और चेहरे पर दाढ़ी के कारण वह असमंजस में थीं, क्योंकि प्रभात के सिर पर घने बाल होते थे और वह क्लीन शेव्ड रहता था।

प्रेरणा को अपने बचपन एवं कॉलेज के दिनों की याद ताजा हो उठी। अतीत की सारी घटनाएँ दृश्य बनकर जैसे एक–एक कर उसकी आँखों के सामने से गुजर रही थीं।

बचपन में वह प्रभात के साथ ही स्कूल जाती थी। सरस्वती विद्या मन्दिर से दोनों ने सीनियर सैकेण्डरी की परीक्षा पास की थी। प्रभात पड़ोस में रहने वाले शर्मा अंकल का बेटा था। पापा और शर्मा अंकल दोनों सी.बी.आर.आई. में कार्यरत् थे तथा उनमें गहरी दोस्ती थी। दोनों परिवारों में बड़ी घनिष्ठता थी। प्रभात और वह साथ–साथ स्कूल जाते, साथ–साथ खेलते थे, यहाँ तक कि अक्सर भोजन भी साथ–साथ करते थे। एक बार होली के त्योहार पर उसने प्रभात को पक्के रंग से रंग दिया था। बहुत बुरा मान गया था वह, कई दिनों तक बात भी नहीं की थी। आण्टी के डाँटने पर और मेरे माफी मांगने पर माना था। स्कूल बस की खिड़की में मेरा हाथ आ जाने पर उंगली से खून बहने लगा था। प्रभात ने बिना देरी किए अपना रुमाल निकालकर उंगली पर बाँध दिया था। साथ–साथ खेलते कूदते दोनों कब बड़े हो गए पता ही नहीं चला। बचपन की दोस्ती में प्यार के अंकुर फूटने लगे थे। एक–दूसरे का साथ दोनों को अच्छा लगता था। 10+2 के बाद प्रभात ने मानविकी वर्ग में बी.ए. करने के लिये दाखिला लिया था। वह आई.ए.एस. बनना चाहता था। स्वयं उसने जीवविज्ञान ग्रुप में प्रवेश लिया था वह एम.एस.सी. के बाद नेट क्वालिफाई कर डिग्री कॉलेज में व्याख्याता बनना चाहती थी। ग्रेजुएशन के तीन साल बहुत तेजी से गुजर गए। सब कुछ ठीक चल रहा था। स्नातक के अन्तिम वर्ष की परीक्षा के बाद पुस्तकालय की पुस्तकें वापिस करने वह कॉलेज आई थी कि किसी का फोन आया– ''तुरन्त घर चली आओ।''

घर आकर देखा तो पड़ोस के सारे लोग और सी.बी.आर.आई. के पापा के साथी खड़े थे, भीड़ लगी थी। उसका दिल तेजी से धड़कने लगा। किसी आशंका के डर से वह भीतर तक काँप गई थी। पता चला तो जैसे उसकी हँसती–खेलती ज़िन्दगी को किसी की नजर लग गई हो। हरिद्वार रोड पर हुए एक्सीडेंट में एक टैंकर ने मम्मी–पापा दोनों को कुचल दिया था। मम्मी ने तो मौके पर ही दम तोड़ दिया था। पापा को गम्भीर हालत में एक प्राइवेट अस्पताल में भर्ती कराया गया था। थोड़ी देर बाद किसी ने आकर बताया कि वह भी नहीं बचे। उस पर मानो वज्रपात हो गया हो। कुछ भी नहीं सूझ रहा था उसे। उसकी आँखों के समान अँधेरा छा गया। उसकी दुनिया उजड़ गई थी। इस भरे संसार में अब उसका कोई नहीं था। पापा अकेले थे, इसलिए कोई ताऊ–चाचा भी नहीं एक मामा था, जिसके साथ मम्मी–पापा के रिश्ते कभी भी मधुर नहीं रहे। हर कोई ढाढ़स बँधा रहा था, लेकिन उसे पता था कि यह सब औपचारिकता है। प्रभात लगातार हौंसला देता रहा, बोला, ''मैं तो हूँ।'' माँ–बाप को खोने के बाद वास्तव में ले–देकर अब प्रभात ही तो था, जो उसकी भावनाओं को समझ सकता था। वह तीन–चार दिन तक लगातार रोती रही, अब उसकी आँखों के आँसू सूखने लगे थे। तेरह दिन बाद होने वाली तेरहवीं–पगड़ी की रस्म सात दिन में ही कर दी गई थी। हवन करके घर की शुद्धि की गई। रिश्तेदार औपचारिकता पूरी करके चलते बने। सभी ने यही कहा था, ''ईश्वर की इच्छा के सामने किसी का कोई जोर नहीं चलता, आदमी आखिरकार मौत के सामने आकर ही हारा है। बेटी धैर्य धारण करो और अपना ख्याल रखो।'' भविष्य की चिन्ता उसके सामने मुँह उठाए खड़ी थी। उसने कहा था कि वह रुड़की में रहकर ही अपनी पढ़ाई करेगी, लेकिन उसकी एक न चली। बिगड़ते समाज का हवाला दिया गया। जिस मामा ने जीते जी मम्मी–पापा से सीधे मुँह बात नहीं की, वह भान्जी को अपने बहन–बहनोई की निशानी बताकर उसे अपने साथ फरीदाबाद ले जाने की जिद पर अड़ गया। स्थानीय मिलने जुलने वालों और रिश्तेदारों ने भी किसी भी प्रकार की जिम्मेदारी से बचने के लिए उसका मामा के साथ जाने को ही उचित ठहराया।

उसे मामा–मामी के साथ फरीदाबाद जाना पड़ा था। प्रभात भी चुप रहकर सब देखता रहा था, उसका कोई बस नहीं चला। घर पर ताले लगा दिए गये थे। कुछ दिन बाद सी.बी.आर. आई. कालोनी का क्वार्टर खाली कर सामान भी फरीदाबाद मंगवा लिया गया। वहाँ उसका मन नहीं लगा था। वह बिल्कुल टूट गई थी। उसका मोबाईल कहाँ था, यह भी उसे पता नहीं था। रोने–धोने में ही वह कहीं छूट गया। उसे कोई चाहत भी नहीं थी, कहीं बात करने की।

समय बड़े–बड़े घाव भर देता है। उसने भी यह मान लिया था कि यह कटु सत्य है कि उसके मम्मी–पापा अब इस दुनिया में नहीं है। अब उसे प्रभात की भी याद आने लगी थी, लेकिन प्रभात का नम्बर उसके मोबाईल में ही था, उसे याद नहीं था। दर्दनाक हादसे से वह अभी पूरी तरह उबर भी नहीं पाई थी कि मामी के तानों ने उसका जीवन दूभर कर दिया।

धीरे–धीरे घर में उसकी स्थिति नौकर जैसी हो गई थी। मामा के बेटा–बेटी भी उसके साथ नौकर जैसा ही बर्ताव करते थे। ''माँ–बाप को खा गई, अब मनहूस सूरत बनाकर यहाँ नेस्ती फैला रही है,'' मामी ने तंज भरे लहजे में जोर से कहा था। मामी की बात सुनकर उसका हृदय चीत्कार कर उठता था। मामा सुबह ड्यूटी और बच्चे स्कूल चले जाते थे, उसके बाद घर में मामी की तानाशाही चालू हो जाती थी। नाश्ता बनाने से लेकर घर की सफाई, कपड़े धोना फिर दोपहर का खाना बनाना सब कुछ उसे ही करना होता था। मामी ने मामा से कहा था कि घर में एक आदमी का खर्च बढ़ गया है, इसलिए अब नौकर को हटा देना चाहिये। मामा ने भी मामी की बात से सहमति व्यक्त की थी।

अपने दिनों को वह किसी तरह से धक्का दे रही थी कि एक दिन उसे बताया गया कि उसे देखने के लिए मेहमान आने वाले हैं। उसका मन नहीं था, फिर भी मामी के डर से उसे तैयार होना पड़ा। एक अधेड़ उम्र का आदमी जिसे लड़का बताया जा रहा था, उसे देखने आया। उसके साथ उसके भाई और भाभी भी थे। लड़के की भाभी ने कहा कि हमारा सुबोध पत्नी के स्वर्गवासी होने के बाद बिल्कुल अकेला सा हो गया है। आपकी और हमारी दोनों की मजबूरी है। हमें घर चलाने वाली एक बहू चाहिए और आपको भी माँ–बाप को खो चुकी इस अनाथ लड़की के हाथ पीले करने ही हैं। उसे लगा कि जैसे अब उसका अपना कोई अस्तित्व नहीं रह गया है। वह केवल एक वस्तु बन कर रह गई है। मामा–मामी उससे जितनी जल्दी हो, उतनी जल्दी छुटकारा पाना चाहते हैं।

उसके मन में आया कि वह यहाँ से भागकर रुड़की चली जाए तथा प्रभात से सब कुछ बता दे और उसके साथ वहीं रहे। लेकिन नियति को कुछ और ही मंजूर था। एक सप्ताह बाद ही उसका विवाह बिना उसकी मर्जी के उसी विधुर के साथ कर दिया गया। उसे शादी की तनिक भी प्रसन्नता नहीं हुई थी, लेकिन मामी के तानों तथा पिटाई से बचने का शायद यह अच्छा विकल्प हो, उसने सोचा था। पक्के काले रंग का मोटे पेट वाला अधेड़ उम्र वाला उसका शौहर उसे कतई पसन्द नहीं था। दुर्भाग्य की मार के सामने वह कुछ कर भी तो नहीं सकती थी। उसने अपने आप को पूरी तरह से परिस्थितियों के हवाले कर दिया था। पिछले एक साल में उसकी जिन्दगी में क्या क्या नहीं हुआ। शादी के बाद प्रभात का ख्याल भी अपने मन से उसने निकाल दिया था। उसका पति रोज पीकर घर आता और बात–बात में उसे पीटता था।

अब जैसे इन चीजों का विरोध करने की भी ताकत उसमें समाप्त हो गई थी। वह अपनी किस्मत पर रोती रहती। सूख कर काँटा हो गई थी वह। गोरा चेहरा काला पड़ गया था। आँखों के नीचे काले धब्बे उसे असल उम्र से दोगुना घोषित कर रहे थे। एक दो बार उसने मामा–मामी से शिकायत की थी, लेकिन उन्होंने उल्टे उसी की गलती निकालकर फरमान सुना दिया था कि अब यही उसका घर है, यहीं से उसकी अर्थी उठेगी। इसलिए उस घर में ही अब उसे एडजैस्ट करके रहना है।

उस पूरे परिवार में उससे कोई ढंग से बात करता या उससे किसी को सहानुभूति थी, तो वह थी बड़े भैया की बेटी विशाखा, जो कक्षा दस में पढ़ रही थी। विशाखा को उससे बहुत लगाव था। चाची के साथ चाचा और मम्मी–पापा द्वारा किए गए दुर्व्यवहार से भी उसे बहुत दुःख होता था। छोटी बच्ची ने एक दिन चाची से कह दिया था, ''चाची! आप हौंसला रखो और अन्याय के सामने मत झुको। विशाखा की बात सुनकर उसे बहुत बल मिलता था। इस प्रेरणा से ही उसका

आत्मबल जाग्रत होने लगा था। अब वह अन्याय का विरोध करने की हिम्मत जुटाने लगी थी। पता नहीं कैसे अब उसके अन्दर शक्ति का संचार होने लगा था। उसने इरादा कर लिया था कि अब वह अपना अतीत भूलाकर नई ज़िन्दगी शुरु करेगी। लेकिन इस घर के हालातों में यह सब कैसे सम्भव था? शून्य में निहारते हुए अचानक उसके दिमाग में एक तस्वीर उभरी थी – वह थी उसके पापा की रिश्ते की बहन जिसे वह शान्ति बुआ कहा करती थी। लेकिन न तो उनका कोई फोन नम्बर उसके पास था और न ही उनका पता। एक बार मम्मी–पापा के साथ वह बुआजी के घर इन्दौर गई थी। बस उसे इतना पता था कि बुआजी माधवनगर मौहल्ले में रहती थी, जो मुम्बई रोड़ पर स्थित है। उसने विशाखा से चुपचाप एक अन्तर्देशीय पत्र मंगाकर उसमें सारी आपबीती लिख डाली और उसे श्रीमती शान्ति वैखानस, माधवनगर, मुम्बई रोड़, इन्दौर के पते पर भेज दिया। उसे डर लग रहा था कि बिना मकान नम्बर के चिट्ठी शायद ही पहुँच पाएगी। पोस्टमैन बुआजी को अच्छी तरह जानता था, इसलिए बिना मकान नम्बर लिखे भी पत्र बुआजी के पास पहुँच गया।

एक सप्ताह बाद ही बुआजी अपने देवर के साथ फरीदाबाद पहुँच गई। वह दौड़कर बुआजी के गले से लिपटकर बहुत रोई थी। बुआजी के समझाने और प्यार से सहलाने पर वह चुप हुई थी। बुआजी ने ससुराल वालों को सुनाते हुए जोर से कहा था, "अब मैं आ गई हूँ, अब चिन्ता करने की जरुरत नहीं है।"

बुआजी के देवर इन्दौर के पास किसी तहसील में एस.डी.एम. थे। उनका व्यक्तित्व भी रोबीला था। बुआजी के आने से ससुराल वालों को जैसे साँप सूँघ गया हो। खुलकर बातचीत हुई। बुआजी ने मामा–मामी को भी बुला लिया। उन्होंने सभी को जमकर लताड़ पिलाई थी। मामा–मामी को तो बुरी तरह लज्जित करते हुए बुआजी ने कहा था, "यदि सगी भान्जी भी तुम पर बोझ थी तो इसका बेमेल विवाह कराने के बजाय इसे अनाथालय में ही छोड़ देते। मामा–मामी की गर्दन शर्म से झुकी जा रही थी। बुआजी ने अकेले में मुझसे बात की थी और फिर अपना निर्णय सुनाते हुए उन्होंने कहा था, " देखिए हमारा आपसे कोई झगड़ा नहीं है, जो हुआ सो हुआ, मुझे आपका दोष इतना नहीं लगता जितना इन मामा–मामी का है, लेकिन मेरा निर्णय साफ है, अब मेरी बेटी इस घर में नहीं रहेगी। बुआजी और उनके देवर के कड़े तेवरों के सामने ससुराल वाले हथियार डाल चुके थे। दोनों पक्षों की सहमति से तलाक होना स्वीकार किया गया। बुआजी के देवर के कोई जानकार वकील थे, उन्हें बुलाकर पेपर्स तैयार करा लिए गये और तय हुआ कि जब कोर्ट में बयान देने की जरुरत होगी तो हम कोर्ट में आ जाएँगे।

बुआजी ने मुझे अपने साथ लिया और मैंने उस यातनाघर को सदा के लिए बाय–बाय कह दिया था। उस समय मैं ऐसा महसूस कर रही थी जैसे कोई पक्षी पिंजरे से निकलकर स्वच्छन्द आका'ा में उड़ रहा हो। जाते हुए विशाखा को गले लगाकर बहुत प्यार किया था, उसकी आँखों में भी हर्ष मिश्रित आँसू थे। रात हो गई थी, उस रात बुआजी के परिचित के यहाँ रुके थे। अगले दिन देहरादून–इन्दौर एक्सप्रेस ट्रेन में तत्काल टिकट लेकर वह फरीदाबाद से इन्दौर पहुँचे थे।

घर आकर बुआजी ने माथे पर ममता भरा हाथ फेरते हुए कहा था, "अपने अतीत को दफन कर दो बेटी, सारी जिन्दगी पड़ी है। अब तू पढ़ाई कर और कुछ बनकर दिखा, जिससे स्वर्ग में बैठे तेरे मम्मी–पापा को भी चैन मिलेगा।"

उसने मन ही मन दृढ़ संकल्प कर लिया था कि उसे कुछ करके दिखाना है। अपने घर में अकेली रहने वाली बुआजी के आँगन में भी रौनक सी आ गई थी। पास वाले घर में बुआजी के देवर का परिवार रहता था। वे सब भी बहुत प्यार करते थे उसे। तय किया कि पूरी मेहनत से तैयारी करुँगी। यू.जी.सी. नेट, आई.ए.एस., पी.सी.एस. (म.प्र.) तीनों परीक्षाओं की तैयारी करुँगी। मम्मी–पापा का स्मरण कर वह जुट गई। बुआजी का दुलार निरन्तर प्रेरित करता रहा।

एक साल की कड़ी मेहनत से ही उसने आई.ए.एस. का प्री निकाल दिया था। फिर वह मुख्य परीक्षा की तैयारी में जुट गई थी। मुख्य परीक्षा का परिणाम भी उसके लिए आशानुरुप ही रहा था। अब उसे साक्षात्कार के लिए दिल्ली जाना था। साक्षात्कार देकर वह इन्दौर आ गई थी। अपने पर उसे पूरा भरोसा था। जब परिणाम आया तो ओवरऑल मेरिट में वह पाँचवे स्थान पर थी तथा महिलाओं की मेरिट को उसने टॉप किया था। बुआजी की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। उनकी आँखों से खुशी के आँसू रुकने का नाम नहीं ले रहे थे। बुआजी ने पूरे मौहल्ले में मिठाई बाँटी थी।

उस दिन जैसे उसका पुनर्जन्म हुआ था। उसने मध्य प्रदेश कैडर चुना था। 14 वर्ष तक म0प्र0 में भिन्न–भिन्न पदों पर कार्य करते हुए वह सतना जिले की जिलाधिकारी बनी थी। आवश्यक प्रतिनियुक्ति लेने के लिये उसने स्वयं अण्डमान निकोबार द्वीप समूह की वरीयता दी थी, जो उसे मिल भी गई थी। अब वह मध्य अण्डमान की जिलाधिकारी थी। ये तमाम घटनाक्रम चलचित्र की भाँति उसकी आँखों में घूमता रहा। उसे पता ही नहीं चला कि गोष्ठी में इस बीच क्या हुआ? मुख्य अतिथि सम्बोधन के लिए उसका नाम पुकारे जाने पर भी वह सुन नहीं पाई थी। बराबर में बैठे कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ. कृपाशंकर यादव ने उन्हें जोर से बताया कि बेटी आपका भाषण होना है, तो जैसे वह निद्रा से जागी हो। साहित्य में पर्याप्त रुचि होने के कारण प्रेरणा शर्मा ने भी भारतीय साहित्य में नैतिकता के स्वर विषय पर अपने सधे हुए विचार रखे। अतिथि साहित्यकारों ने भी कलेक्टर प्रेरणा शर्मा की साहित्यिक सोच एवं मजबूत पकड़ पर आश्चर्य व्यक्त किया था।

अध्यक्ष जी के औपचारिक संबोधन के बाद जलपान पर प्रेरणा शर्मा की भेंट रुड़की से पधारे डॉ. पी.के. कपिल से हुई। पता नहीं क्यूँ काफी भिन्नता के बावजूद उसे डॉ. पी.के. कपिल में प्रभात नजर आ रहा था। उसने संकोच के साथ पूछ ही लिया – "डॉ. साहब आपका पूरा नाम क्या है?"

डॉ. कपिल ने उत्तर दिया, "मुझे प्रभात कुमार कपिल कहते हैं।"

प्रेरणा का शक विश्वास में बदल गया। वह प्रभात को लगभग अठारह वर्ष बाद अपने सामने पाकर बहुत खुश थी। उसने हिंदी साहित्य एवं कला परिषद के अध्यक्ष राम प्रकाश दूबे से कहा कि डॉ. कपिल उसके साथ जाएँगे। डॉ. पी.के. कपिल ने कहा, लेकिन .....!

"लेकिन वेकिन कुछ नहीं, आपको मेरे साथ चलना होगा", प्रेरणा पूरे अधिकार भाव से बोली। बहुत दिन बाद मेरे क्षेत्र का कोई व्यक्ति मिला है, घर पर बैठकर बात करेंगे, अभी उसने केवल इतना ही कहा था।" ड्राइवर से भी बोल दिया था, "डॉ. कपिल साहब का सामान गाड़ी में रखो।"

जलपान के बाद आयोजकों से अनुमति लेकर प्रेरणा शर्मा व डॉ0 कपिल ने जिलाधिकारी आवास की ओर प्रस्थान किया। बीच में ही प्रेरणा ने ड्राइवर से कहा कि राजीव पार्क चलो । गाड़ी से उतरकर दोनों समुद्र के किनारे राजीव पार्क में पहुँच गए। जादुई खुबसूरती का नजारा था वहाँ। दूर तक फैला हुआ समुद्र दायीं तरफ पोर्टब्लेयर की सुन्दर इमारतें और ऊँचे ऊँचे नारियल के पेड़। पार्क में पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की आदमकद से बड़ी प्रतिमा लगी हुई थी। पास ही जेट्टी पर तीन चार बड़ी–बड़ी मोटरबोट खड़ी थीं। यहाँ से सामने अंग्रेजों की राजधानी का रोज आईलैंड साफ दिखाई देता है। पीछे ऊपर ऊँचाई पर सेल्यूलर जेल भी दिखाई देती है, मानो कालापानी के कैदियों की यातनापूर्ण दास्तानों की मूक गवाही दे रही हो।

डॉ. कपिल को कलेक्टर प्रेरणा शर्मा के साथ टहलते हुए बहुत संकोच हो रहा था। एक अनजान स्त्री का उसे अपने साथ इस प्रकार ले आना? उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था। समुद्र की

लहरें बार बार आकर किनारे पर टक्कर मार रही थीं। जैसे अपनी गति और निरन्तरता का संदेश दे रही हों। लेकिन उसके लिए सारा घटनाक्रम एक पहेली बना हुआ था।

प्रेरणा की शक्ल नीलिमा से बहुत मिलती है लेकिन दोनों के साम्य का औचित्य? कुछ भी तो नहीं। वह भी किसी सोच में खो गया था। शान्त वातावरण में मिठास घोलते हुए प्रेरणा ने सीधा प्रश्न किया, ''डॉ0 साहब! आपने मुझे पहचाना?

डॉ. कपिल को इस प्रश्न की बिल्कुल भी उम्मीद नहीं थी। हल्की मुस्कुराहट और संकोच के साथ उसने कहा,"मैडम! मैं तो आपसे पहली बार आज के कार्यक्रम में ही मिला हूँ। इससे पहले मेरी भेंट कभी आपसे नहीं हुई।"

प्रेरणा ने दूसरा गोला दागा, "रुड़की में आपके पिताजी सी0 बी0 आर0 आई0 में सर्विस करते थे ना?"

वह प्रेरणा के चेहरे को लगभग घूरते हुए कुछ बोलने का प्रयास कर रहा था कि प्रेरणा ने फिर कहा,"अंकलजी का नाम नरेन्द्र शर्मा है ना?"

डॉ. कपिल की आश्चर्य की सीमा नहीं थी। वह जड़वत् था। उसके मुँह से शब्द भी नहीं निकल रहे थे। प्रेरणा निरन्तर बोल रही थी। उसने बहुत सारी और बातें भी बताई। विस्मय के साथ डा0 कपिल ने प्रेरणा से पूछा, "आपको यह सब कैसे पता है, प्रेरणा जी!" इतनी सारी बातों के बाद वह भी मैडम से प्रेरणा जी पर आ गया। प्रेरणा भी वातावरण को अनौपचारिक और हल्का बनाते हुए बोली, "प्रभात जी, हम ज्योतिषी हैं, सब जानते हैं।" प्रभात प्रेरणा की इस बात पर मुस्कुरा भर दिया था। एक तरफ समुद्र की लहरों का शोर, दूसरी तरफ उसके मन में अगणित सवालों का तूफान, वह किंकर्तव्यविमूढ़ वाली स्थिति में था। डॉ0 कपिल की बेचैनी पर तरस खाते हुए फिर से चुप्पी तोड़ते हुए प्रेरणा ने सीधे सीधे कहा," मुझे नीलिमा शर्मा कहते हैं प्रभात जी!"

दोनों की ऑखें चार हुई, एक दूसरे को एक टक निहारते रहे। प्यार का सागर उमड पडा। दोनों ने एक दूसरे को गले लगाकर न जाने क्या क्या बड़बड़ाया। अचानक अपनी गलती का अहसास होने पर दोनों अलग हो गए। पश्चाताप की शर्म दोनों के चेहरे पर साफ झलक रही थी।

प्रभात ने पूछा, "नीलिमा तुम्हारा परिवार कहाँ है?" नीलिमा की आँखों में आँसू आ गए। "परिवार के नाम पर मम्मी पापा ही तो थे, तुम्हें पता ही है वे मुझे अकेला छोड़कर सदा के लिए चले गए थे।" रोते हुए बड़ी मुश्किल से कह पायी थी वह।

प्रभात बोला, उस दुर्घटना के बाद जब तुम्हारे मामाजी तुम्हें ले गए थे, उसके बाद तुम्हारा कोई पता नहीं चला। न कोई फोन आया, न हमारे पास मामाजी का पता था। मैंने तुम्हारी बहुत प्रतीक्षा की, नीलिमा! मैं तुम्हारे बिना पागल सा हो गया था। दुःख के क्षणों में मैं तुम्हें सहारा भी तो नहीं दे पाया। नियति ने हमें एक दूसरे से अलग कर दिया था। मिलने की कोई सूरत भी तो नहीं थी। मेरी समझ में यह नहीं आया, नीलिमा! इस बीच तुमने मुझसे बात क्यों नहीं की?"

नीलिमा ने बताया कि फोन उसी बीच कहीं घर में ही खो गया था। मुझे तो कुछ सुध–बुध उस समय नहीं थी। फिर मुझे वे लोग फरीदाबाद ले गए और उसके साथ किस्मत ने कितना क्रूर मजाक किया, पूरी कहानी कहती चली गई थी नीलिमा। प्रभात सुनता रहा। उसे नीलिमा पर तरस आ रहा था। नीलिमा ने सब कुछ बता दिया कि एक बार रुड़की आने का भी वक्त नहीं निकाल निकाल पाई थी वह। परिस्थितियों में जकड़कर रह गई थी, विवश थी, बेबस थी। प्रभात से ही पूछा,

"यदि तुम मेरी जगह होते तो क्या करते? उसके बाद बुआजी का सहारा, आई0 ए0 एस0 में चयन और जीवन में विवाह न करने का संकल्प सब कुछ बता दिया था नीलिमा ने प्रभात को। वह अपने अतीत को बिल्कुल भी याद नहीं रखना चाहती थी इसलिए कोर्ट में शपथ पत्र देकर उसने अपना नाम तक बदल डाला था।

शिकायती अन्दाज में प्रभात ने नीलिमा से कहा, "आई.ए.एस. बनने के बाद तो रुड़की आकर मिल सकती थी एक बार या फिर हम तुम्हारे स्तर के नहीं रह गए थे। प्रभात ने व्यंग्य कसा था।"

"नही प्रभात ऐसा नहीं था। मुझे लगा था कि तुम अपनी वैवाहिक जिन्दगी में मस्त होगे। मै उसमें आकर तुम्हारी जिन्दगी में कोई व्यवधान उत्पन्न नहीं करना चाहती थी। मैंने अपने आपको किस तरह रोका होगा, कितना मजबूत बनाया होगा अपने आपको, यह देखकर तुम मुझ पर व्यंग्य नहीं कर सकते।"

"अरे मैं भी कितनी बेवकूफ हूँ, अपनी अपनी कहे जा रही हूँ। अच्छा तुम बताओ, तुम्हारी बीवी कैसी है? कितने बच्चे हैं? कितने बड़े हो गए हैं? कौन कौन सी कक्षा में पढ़ते हैं?, एक ही साँस में प्रेरणा ने कई सारे प्रश्न कर दिये थे।

नीलिमा के प्रश्नों की बौछार का कोई असर नहीं हुआ प्रभात पर। वह चुप खड़ा रहा। प्रेरणा ने फिर कुरेदा, "अरे बताओ भई, चुप क्यों हो? प्रभात को बोलना ही पड़ा, "तुम्हारे जाने के बाद जीवन नीरस हो गया था। तुम्हारी यादों के सहारे जिन्दगी गुजारता रहा, इस आशा के साथ कि तुम आओगी या तुम्हारी कोई चिट्ठी पत्री आएगी ताकि मैं तुमसे जाकर मिल सकूँ। लेकिन कुछ भी तो नहीं हुआ।"

मम्मी–पापा ने शादी के लिए बहुत जोर दिया लेकिन मैं तुम्हारी यादों के सहारे जिन्दगी जीने का संकल्प ले चुका था। नीलिमा! मैंने भी विवाह नहीं किया। छोटे भाई आदित्य की शादी हो गई थी। उसके एक बेटा, एक बेटी मम्मी पापा का मन लगाए रखते हैं। ग्रेजुएशन के बाद मैंने हिंदी में एम0 ए0 किया फिर पी–एच. डी. और नेट करके वहीं उसी कालेज में व्याख्याता हो गया। अब रीडर हूँ। कभी सोचा भी नहीं था, जिन्दगी में दुबारा मिलना भी होगा। हे ईश्वर! तेरी महिना अपरम्पार। मन ही मन भगवान का धन्यवाद कर रहा था प्रभात।

दोनों को बात करते–करते पता भी नहीं चला कि रात के दस बज चुके थे। ड्राइवर ने आकर पूछ ही लिया," मैडम! घर कब चलेंगे?" मोबाइल में टाइम देखा दस बजकर सोलह मिनट हो रहे थे। दोनों घर की ओर चल दिए। जिलाधिकारी के सरकारी आवास पर नीलिमा की बुआजी चिन्तायुक्त मुद्रा में बिटिया का इन्तजार कर रही थीं। बिना बताए कभी इतनी देर तक नीलिमा घर से बाहर नहीं रही। सरकारी कामकाज से देर होती भी थी तो फोन करके बुआजी को बता देना वह कभी नहीं भूलती। नीलिमा के साथ प्रभात को देखकर बुआजी ने सोचा कि यह भी कोई अफसर होगा। नीलिमा जब से बुआ जी के पास आई थी तभी से बुआजी ने नीलिमा का साथ नहीं छोड़ा था। नीलिमा का जिस शहर में पोस्टिंग होता, बुआजी हमेशा उसके साथ रहतीं। फूकाजी का तो लगभग 22 वर्ष पूर्व देहांत हो चुका था। कभी कभी इंदौर जाकर देवर और उसके बच्चों से मिल आती थी। कभी कभी उन्हें अपने पास भी बुला लेती थीं।

नीलिमा ने बुआजी से प्रभात का परिचय कराया। दोनों की आँखें मिलीं, नीलिमा ने मुस्कुरा दिया और बुआजी ने सब–कुछ जान लिया। बुआजी की ऑखों में चमक आ गई। बोली, "बेटा सारा दिन तुम्हारी बात करती रहती है। मैंने कितनी बार कहा कि मैं रुड़की जाकर प्रभात से मिल आती

हूँ। मैं चाहती थी कि तुम दोनों का विवाह हो जाये। लेकिन हर बार कसम देकर रोक लेती थी कि प्रभात की शादी हो गई होगी, अब मैं उसके जीवन में जाकर उसके लिए कोई समस्या नहीं बनना चाहती। किसी और से शादी करने की बात पर तो इतना नाराज हो जाती है कि मेरे साथ कई–कई दिन तक बात नहीं करती। हारकर मुझे कहना पड़ता है कि बाबा अब मैं कभी शादी की बात नहीं करुँगी।

प्रभात ने भी शादी नहीं की, यह जानकर बुआजी को संतोष हुआ था। प्रभात को पोर्टब्लेयर में तीन दिन रुकना था। उस रात खाना खाकर तीनों सो गये। लेकिन किसी को भी नींद नहीं आई। भगवान का करिश्मा भी कैसा–कैसा है, जो घटित हुआ उस पर तीनों को विश्वास नहीं हो रहा था।

सुबह थोड़ा देरी से उठे थे। नाश्ता दस बजे हो रहा था। बुआजी ने ही बात शुरु की, ''बेटा पिचहत्तर पार कर चुकी हूँ। न जाने कब बुलावा आ जाये। जीते जी तुम दोनों को एक साथ देखना चाहती हूँ। उम्मीद छोड चुकी थी लेकिन भगवान का लाख–लाख शुक्रिया जो तुम मेरे लिए उम्मीद बनकर आये हो, प्रभात बेटा!'' बुआजी लगातार बोले जा रही थी। नीलिमा और प्रभात चुपचाप सुन रहे थे। कभी–कभी एक दूसरे को कनखियों से देखकर मुस्कुरा देते थे।

आज नीलिमा ने प्रभात को रोज आईलैण्ड, नार्थवे आईलैण्ड तथा हैवलॉक घुमाने का कार्यक्रम रखा। शाम को सेल्यूलर जेल में लाईट एण्ड साऊण्ड शो देखने का प्रोग्राम बना।

रात में फिर बहुत बात हुई। बुआजी द्वारा नीलिमा को प्रेरणा देने और साथ रहकर पूरा हौंसला देने से प्रभात बहुत प्रभावित था। बुआजी सगी नहीं थीं, दूर के रिश्ते में पिताजी की बहन लगती थीं। जबकि मामा–मामी ने सगे होने के बावजूद नीलिमा की जिन्दगी को तबाह करने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। प्रभात बुआजी के त्याग के सामने नतमस्तक था।

प्रभात ने भी रुड़की घर पर फोन करके मम्मी–पापा को सब कुछ बता दिया था। फोन पर मम्मी–पापा से नीलिमा और बुआजी की बात भी कराई। उन्हें भी बहुत खुशी हुई। अपने बेटे की जिन्दगी में रोशनी हो जाने की आशा से वे फूले नहीं समा रहे थे। बुआजी ने बोल दिया था कि वह प्रभात और नीलिमा का रिश्ता पक्का करने अगले महीने रुड़की आ रही हैं।

आज प्रभात को वापस जाना है। सुबह आठ बजे जैट एयरवेज की फ्लाइट है। बुआजी ने सूखे आलू और पूरी बनाकर रास्ते में खाने के लिए रख दिये हैं। प्रभात को छोड़ने दोनों वीर सावरकर अन्तर्राष्ट्रीय विमानपतन जाती हैं। बोर्डिंग पास लेकर प्रभात दोनों के पास बैठ जाता है। बातों का सिलसिला थम नहीं रहा है। घोषणा होती है कि वाया चेन्नई, दिल्ली जाने वाले यात्री सुरक्षा जाँच के लिए गेट पर पहुँचें। बिछुडने का पल दर्दनाक होता है। लेकिन यह बिछुड़ना कोई बिछुड़ना नहीं है, बल्कि पुनर्मिलन से पहले की एक औपचारिकता मात्र है। नीलिमा और प्रभात दोनों एक दूसरे का हाथ पकड़े खड़े हैं। बुआजी की आँखों से दोनों के लिए आशीर्वाद रूपी अमृत झर रहा है। उड़ान के लिए अन्तिम घोषणा। प्रभात को न चाहकर भी जाना ही पड़ा। वह हाथ हिलाता हुआ आगे बढ़ गया।

बुआजी और नीलिमा दोनों बाहर आकर विमान के उड़ने का इन्तजार करने लगीं। थोड़ी देर बाद विमान ने चेन्नई की ओर उड़ान भर दी। दोनों हाथ हिलाकर प्रभात को विदा कर रही थीं जैसे उतनी ऊँचाई से भी वह सब देख रहा हो। विमान में बैठा प्रभात भी अपनी नई जिन्दगी के ताने–बाने बुन रहा था। 'कालापानी' संज्ञा वाली अण्डमान की धरती ने उसको जो सौगात दी है, उसे वह जीवन भर नहीं भुला पाएगा।

बुआजी और नीलिमा सरकारी आवास पर लौट आये हैं। नीलिमा खुद चाय बनाकर लाई। बुआजी रुड़की जाने की तैयारी और विवाहोत्सव का दिमागी खाका बनाने में लग गईं। ईश्वर बड़ा दयालू है। उसके यहाँ देर है, अंधेर नहीं। सच्चा प्यार करने वाले जरुर मिलते हैं। बुआजी इस पुनर्मिलन से बहुत प्रसन्न थीं। चाय की चुस्कियों के साथ–साथ उनके मुख से रामचरितमानस की ये पंक्तियाँ अनायास ही निकल रही थी–

जेहि कें जेहि पर सत्य सनेहू।
सो तेहि मिलइ न कछु संदेहू।।

सरलता और शीघ्रता से सीखी जाने योग्य भाषाओं में हिंदी सर्वोपरि है।

–लोकमान्य तिलक